समाज मनोविज्ञान का अन्य विज्ञानों के साथ सम्बन्ध
(Relation of Social Psychology with other Sciences)

समाज मनोविज्ञान का संबंध अन्य विज्ञानों से काफी है। जैसे—इसका संबंध समाजशास्त्र (Sociology) तथा मानवशास्त्र (Anthropology) से काफी है। इतना ही नहीं, समाज मनोविज्ञान का संबंध मनोविज्ञान के अन्य दूसरी शाखाओं जैसे—सामान्य मनोविज्ञान (General psychology) या वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual psychology) तथा व्यक्तित्व का मनोविज्ञान (The psychology of personality) से भी है। पहले हम मनोविज्ञान की इन दो शाखाओं के साथ समाज मानेविज्ञान का किस तरह का संबंध है इसका अध्ययन करेंगे और फिर बाद में समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं मानवशास्त्र के साथ के संबंधों का अध्ययन करेंगे।

1. समाज मनोविज्ञान का सामान्य मनोविज्ञान या वैयक्तिक मनोविज्ञान के साथ संबंध *(Relationship between Social psychology and General psychology)*—समाज मनोविज्ञान का संबंध सामान्य मनोविज्ञान (General psychology) के साथ घनिष्ठ है। सामान्य मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन प्रयोगशाला में करके उसके बारे में एक पूर्वकथन (prediction) करने की कोशिश करता है। जैसे—वह प्रयोगशाला में इस बात का अध्ययन करता है कि जब उद्दीपक (stimulus) के स्वरूप में परिवर्तन किया जाता है तो उससे व्यक्ति का प्रत्यक्षण (perception) किस

Scanned by CamScanner

तरह प्रभावित होता है। उसी तरह प्रयोगशाला में वह यह भी अध्ययन करता है कि किसी पाठ को स्मरण करने की प्रक्रिया सीखने के भिन्न-भिन्न विधियों जैसे—विराम विधि (spaced or distributed method), अविराम विधि (massed method), पूर्ण विधि (whole method), अंश विधि (part method), साभिप्राय विधि (intentional method) तथा प्रासंगिक सीखना द्वारा किस प्रकार प्रभावित होता है। इस तरह व्यवहार के अन्य मनोवैज्ञानिक पक्षों जैसे—प्रेरणा (motivation), सीखना (learning), चिन्तन (thinking) आदि का अध्ययन कर सामान्य मनोविज्ञान में भिन्न-भिन्न नियमों (principles) तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है। समाज मनोविज्ञान में इन नियमों एवं सिद्धान्तों का उपयोग व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को समझने में किया जाता है। प्रेरणा, प्रत्यक्षण एवं सीखना के क्षेत्र में उत्पन्न भिन्न-भिन्न प्रकार के नियमों से यह समझने में मदद मिलती है कि व्यक्ति अपना सामाजिक लक्ष्य (social goal) कैसे निर्मित करता है, वह किस प्रकार से दूसरे व्यक्तियों एवं घटनाओं का प्रत्यक्षण करता है, वह किस प्रकार के सामाजिक व्यवहारों को सीखता है तथा व्यक्ति की जन्मजात आवश्यकताएँ (inbron needs) किस भाँति सामाजिक प्रभावों (social influences) द्वारा एक खास दिशा में परिवर्तित होती है, आदि-आदि। इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज मनोविज्ञान तथा सामान्य मनोविज्ञान एक-दूसरे से काफी संबंधित है। इस समानता के बावजूद भी इन दोनों विज्ञानों में कुछ भिन्नता है। मानव व्यवहार के कुछ पहलू ऐसे हैं जिनका अध्ययन सामाजिक प्रभावों (social influences) से दूर रहकर ही सही अर्थों में किया जा सकता है। जैसे—स्मृति (memory), कल्पना (imagination) आदि का अध्ययन सामान्य मनोविज्ञान में ही सुचारु रूप से किया जा सकता है, न कि समाज मनोविज्ञान में।

2. समाज मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व-मनोविज्ञान के बीच संबंध *(Relationship between Social Psychology and the Psychology of Personality)*—समाज मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व का मनोविज्ञान दोनों का ही केन्द्र-बिन्दु एक ही है, अर्थात किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहारों का अध्ययन करना। अतः मनोविज्ञान के इन दोनों शाखाओं में काफी घनिष्ठ सम्बन्ध है। मेयर्स (Myers, 1988) के अनुसार इन दोनों के बीच घनिष्ठता इतनी मजबूत है कि अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (American Psychological Association) भी इन दोनों को अलग करने में असमर्थ रहा है। यही कारण है कि इन दोनों शाखाओं में किये जाने वाले शोधों के प्रकाशन को एक ही जनरल (journal) जैसे—*जरनल ऑफ परसनलिटी एण्ड सोशल साइकोलॉजी* (Journal of personality and social psychology) तथा *परसनालिटी एण्ड सोशल साइकोलॉजी बुलेटिन* (Personality and Social psychology Bulletin) में रखा है। इस घनिष्ठ सम्बन्ध के बावजूद भी मनोविज्ञान की इन दोनों शाखाओं में इस प्रकार अन्तर किया जा सकता है—व्यक्तित्व मनोविज्ञान (Personality Psychologist) अपना ध्यान अधिक-से-अधिक व्यक्ति विशेष के आन्तरिक कार्यों (internal functioning) पर अधिक देते हैं और व्यक्तियों के बीच शीलगुणों (traits) के रूप में जो अन्तर व्याप्त है, उसके अध्ययन से उनका सम्बन्ध सीधा होता है। जैसे—एक व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिक यह जानना चाहते हैं कि क्यों एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अधिक आक्रमणशील (aggressive) होता है, क्यों एक ही परिस्थिति में एक व्यक्ति डर-डर कर व्यवहार करता है परन्तु दूसरा व्यक्ति निर्भीक होकर व्यवहार करता है, आदि-आदि। दूसरी तरफ समाज मनोवैज्ञानिक का ध्यान इस ओर भी रहता है कि व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को सामान्य रूप से किस तरह से देखता है, किस तरह की सामाजिक परिस्थिति अधिकतर व्यक्तियों को निष्ठुर (cruel) या दयालु (kind) बना देती है, आदि-आदि। इन अन्तरों (differences) के अलावा मेयर्स (Myers, 1988) के अनुसार इन दोनों शाखाओं के बीच दो और

अन्तर है। पहला अन्तर यह है कि समाज मनोविज्ञान का इतिहास काफी छोटा है जबकि व्यक्तित्व मनोविज्ञान का इतिहास तुलनात्मक रूप से अधिक बड़ा है। सीक्रेस्ट (Seehrest, 1976) के अनुसार व्यक्तित्व मनोविज्ञान के अधिकतर प्रमुख मनोवैज्ञानिक जैसे—साइमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud), कार्ल युंग (Carl Jung), अल्फ्रेड एडलर (Alfred Adler), एब्राहम मैसलो (Abraham Maslow), गौर्डन आलपोर्ट (Gordon Allport) आदि मर चुके हैं जिससे इस शाखा में शोध कार्यों की संख्या कम हो गयी है तथा प्रगति कुछ धीमी हो गयी है। परन्तु समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिकतर प्रमुख मनोवैज्ञानिक अभी भी जीवित हैं। फलस्वरूप इस शाखा में शोधकार्य तेजी से हो रहा है। इस तरह से हम देखते हैं कि समाज मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व मनोविज्ञान एक-दूसरे से एक खास ढंग से सम्बन्धित भी हैं तथा उनमें भिन्नता भी है।

समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध मनोविज्ञान की शाखाओं के साथ होने के अलावा अन्य स्वतन्त्र विज्ञानों जैसे—समाजशास्त्र (Sociology), मानवशास्त्र (Anthropology), राजनीतिशास्त्र एवं अर्थशास्त्र से भी काफी है। इन स्वतंत्र विज्ञानों के साथ समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है—

3. समाज मनोविज्ञान का समाजशास्त्र के साथ संबंध *(Relationship of Social Psychology with Sociology)*—फिशर (Fisher, 1982) ने समाज मनोविज्ञान को समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों का ही एक उपविषय (subdiscipline) माना है। तब यह बिलकुल ही स्वाभाविक है कि समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध अपने पैत्रविषय (parent discipline) यानी समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों के साथ अधिक हो। वास्तव में समाज मनोविज्ञान अपनी विषय-वस्तु (subject-matter) का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों की सहायता लेता है।

समाजशास्त्र संपूर्ण समाज का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन करता है। इनमें सामाजिक संरचनाओं (social structures) तथा सामाजिक संबंधों (social relationship) का अध्ययन किया जाता है। एल० एफ० वार्ड[1] (L. F. Ward) ने समाज के वैज्ञानिक अध्ययन को समाजशास्त्र कहा है। उसी तरह से गिडिंग्स[2] (Giddings) के अनुसार "समाजशास्त्र समग्र रूप से समाज का क्रमबद्ध वर्णन और व्याख्या है।" इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र में समाज का समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है। सचमुच में समाज कोई एक अखण्ड तंत्र (system) नहीं है। इसके अन्तर्गत परिवार, समुदाय, नगर, गाँव, संस्कृति, सभ्यता, जाति, आर्थिक संस्थाएँ, राजनैतिक संस्थाएँ एवं भिन्न-भिन्न प्रकार की सीमितियों का समावेश होता है। इस तरह समाजशास्त्र समाज के भिन्न-भिन्न पहलुओं का अध्ययन करके एक खास सामाजिक परिस्थिति (social situation) को जन्म देता है। एक समाजशास्त्री इन परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न तरह के अध्ययन कर समाज मनोविज्ञान को उनके स्वरूप के बारे में विशेष रूप से वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करते हैं जिसका उपयोग करके समाज मनोवैज्ञानिक उन विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करते हैं। इस तरह से समाजशास्त्र समाज मनोविज्ञान को अपनी विषय-वस्तु समझने में मदद करता है। दूसरी तरफ समाजशास्त्र जिन सामाजिक सम्बन्धों (social relationship) अन्तःक्रियाओं (social interactions) आदि का अध्ययन करता है उनका कोई-न-कोई मनोवैज्ञानिक आधार होता है। समाज

---

1. "Sociology is the scientific study of society." —L. F. Ward
2. "Sociology is the systematic description and explantion of society viewed as a whole." —*Giddings : Introductory Psychology*, p. 9

Scanned by CamScanner

मनोविज्ञान उन मनोवैज्ञानिक आधार की विस्तृत व्याख्या कर समाजशास्त्र को अपनी विषय-वस्तु को समझने में मदद करता है। इस तरह से हम देखते हैं कि समाज में मनुष्य द्वारा की गई अन्तःक्रियाओं एवं उनके भिन्न-भिन्न तरह के सामाजिक सम्बन्धों को समझने के लिए एक समाजशास्त्री को समाज मनोविज्ञान द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं सिद्धान्तों का सहारा लेना पड़ता है। अतः समाजशास्त्र तथा समाज मनोविज्ञान एक-दूसरे से सम्बंधित हैं क्योंकि एक के बिना किसी दूसरे को सही-सही समझना संभव नहीं है। इन दोनों के सम्बन्धों पर अकोलकर[1] (Akolkar, 1960) ने टिप्पणी करते हुए इस प्रकार कहा है "समाज मनोविज्ञान इस तथ्य को स्वीकार करता है कि मानवीय प्रकृति (nature) एवं व्यवहारों की एक संतोषजनक व्याख्या के लिए हमें समाज की संरचना, संगठन तथा संस्कृति को समझना चाहिए जिनसे व्यक्ति सम्बन्धित होता है।" इसी घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने यह भी कहा है कि समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र को किसी भी तरह से अलग करने का प्रयास एक सफल प्रयास नहीं हो सकता है। क्रेच तथा क्रेचफील्ड[2] (Kretch & Crutchfield, 1948) ने इस तथ्य के बारे में अपना विचार प्रकट करते हुए कहा है, "समाज मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रियों को, उनके द्वारा किये गये विशिष्ट शोध या तथ्यों की प्रकृति और उनकी विचारधाराओं के सामान्य निष्कर्षों के आधार पर अलग करने का प्रयास निष्फल ही होगा।"

इन समानताओं के बावजूद समाजशास्त्र तथा समाज मनोविज्ञान में अन्तर है। यह भिन्नता मूल रूप से दोनों विज्ञानों की विषय-वस्तु एवं उसके अध्ययन की विधियों से सम्बन्धित है। जैसाकि ऊपर कहा गया है कि समाजशास्त्र के अध्ययन की विषय-वस्तु समग्र समाज (society as a whole) है जबकि समाज मनोविज्ञान के अध्ययन की विषय-वस्तु समाज में रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार एवं भिन्न-भिन्न तरह की अन्तःक्रियाएँ (interactions) हैं। मेयर्स[2] (Myers, 1988) के अनुसार समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र में दूसरा अन्तर इन दोनों विज्ञानों द्वारा अपनायी गयी विधियों (methods) से सम्बन्धित है। समाज मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करने के लिए प्रायः प्रयोगात्मक विधि (experimental method) का उपयोग करते हैं। इस विधि में वे कुछ चरों में जोड़-तोड़ (manipulation) करके उसका प्रभाव दूसरे चरों पर देखते हैं और तब दोनों चरों के बीच कारण-प्रभाव सम्बन्ध (cause-effect relationship) के बारे में वे एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। उदाहरणस्वरूप, एक समाज मनोवैज्ञानिक नेतृत्व (leadership) की शैली (style) में परिवर्तन करके आसानी से इस बात का अध्ययन कर सकते हैं कि इससे समूह के सदस्यों का व्यवहार किस तरह से प्रभावित होता है। परन्तु प्रायः समाजशास्त्री सर्वे विधि (Survey method) तथा सहसम्बन्धात्मक शोध (correlational research) के सहारे अपनी विषय-वस्तु की समस्याओं का अध्ययन करते हैं। जैसे—सामाजिक-आर्थिक स्तर (socio-economic status) तथा प्रजाति मनोवृत्ति (racial attitude) में क्या सम्बन्ध है, का अध्ययन

1. "Social Psychology recognizes the fact that for a satisfactory explanation of human nature and behaviour, we must take into account the structure, organization and culture of societies to which individuals belong."
—V. V. Akolkar : *Social Psychology* 1960, p. 18.

2. "It would be fruitless to attempt to differentiate among social psychologists... and sociologists on the basis of the specific research they do or the nature of the data and generalizations they use in their thinking."
—Kretch and Crutchfield : *Theory and Problems of Social Psychology* 1948, p. 25.

समाजशास्त्री सर्वे विधि या सहसम्बन्धात्मक विधि द्वारा करके कोई एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं। इस तरह से हम देखते हैं कि समाज मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्री द्वारा अपनी-अपनी समस्याओं का अध्ययन करने के लिए अलग-अलग विधि का उपयोग किया जाता है। यहाँ पर यह भी कह देना उचित होगा कि यद्यपि समाज मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि पर सबसे अधिक बल डाला जाता है, फिर भी यह न समझना चाहिए कि समाज मनोविज्ञान में सहसम्बन्ध विधि तथा सर्वे विधि का प्रयोग नहीं होता है।

4. समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में संबंध *(Relationship between Social Psychology and Anthropology)*—समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध मानवशास्त्र (Anthropology) से भी है। मानवशास्त्र वह विज्ञान है जिसमें मानव-जाति के शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इस विस्तृत परिभाषा (broad definition) से यह स्पष्ट है कि मानवशास्त्र में मानव जीवन के मूलतः तीन पक्षों के अध्ययन पर अधिक बल डाला जाता है—शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक। ये तीनों पक्ष ऐसे हैं जिनपर भिन्न-भिन्न तरह के मनोवैज्ञानिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दीख पड़ते हैं।

लिन्टन (Linton, 1936) के अनुसार मानवशास्त्र की मुख्य दो शाखाएँ (branches) हैं—शारीरिक मानवशास्त्र (Physical Anthropology) तथा सांस्कृतिक मानवशास्त्र (Cultural Anthropology)। इन दोनों शाखाओं की विषय-वस्तु के अध्ययन में समाज मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। शारीरिक मानवशास्त्र में प्रजातीय विभेद (racial differentiation), संकरण (hybridization), मूल व्यक्तित्व पैटर्नस (basic personality patterns) आदि का अध्ययन किया जाता है। शारीरिक मानवशास्त्र के इन सारे पहलुओं का प्रभाव व्यक्तियों के व्यवहार पर पड़ता है। फलस्वरूप व्यक्तियों में अन्तःक्रियाएँ (interactions) होती है जो समाज मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय-वस्तु बनता है। दूसरी तरफ शारीरिक मानवशास्त्री अपनी विषय-वस्तु जैसे प्रजातीय विभेद तथा मूल व्यक्तित्व पैटर्न्स को समझने के लिए समाज मनोविज्ञान के सिद्धान्तों एवं नियमों का विशेष रूप से सहारा लेते हैं। इस तरह ये दोनों विज्ञान आपस में सम्बन्धित हैं। सांस्कृतिक मानवशास्त्र (Cultural Anthropology) में मानव के सांस्कृतिक पक्षों के अध्ययन पर अधिक बल डाला जाता है। मानव संस्कृति की उत्पत्ति कैसे होती है, उसमें कौन-कौन-से ऐसे कारक (factors) उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे सांस्कृतिक परिवर्तन (cultural change) में तीव्रता आ जाती है, मानव के धर्म, विश्वास, रीति-रिवाज आदि का कैसे विकास होता है, आदि-आदि का अध्ययन सांस्कृतिक मानवशास्त्र में होता है। सांस्कृतिक मानवशास्त्र के ये सभी पक्ष कुछ ऐसे हैं जिनका प्रभाव व्यक्तियों के व्यवहारों पर पड़ता है। इस तरह से सांस्कृतिक मानवशास्त्री अपनी विषय-वस्तु के भिन्न-भिन्न पक्षों का अध्ययन करके समाज मनोविज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण आँकड़ा (data) प्रदान करते हैं। दूसरी ओर समाज मनोविज्ञानी भी सांस्कृतिक मानवशास्त्री को व्यक्तियों के स्वभाव (nature) के बारे में अध्ययन करके उसे समाज एवं संस्कृति के मूल तत्त्वों से अवगत कराते हैं। किसी भी समाज की संस्कृति को यथार्थतः तबतक नहीं समझा जा सकता है जबतक कि उस समाज के व्यक्तियों के व्यवहारों के मूल तत्त्वों को न समझा जाए। इस तरह से सांस्कृतिक मानवशास्त्र तथा समाज मनोविज्ञान एक-दूसरे से काफी सम्बन्धित हैं।

इन समानताओं के बावजूद भी समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में अन्तर है। पहला अन्तर तो विषय-वस्तु से सम्बन्धित है। मानवशास्त्र में आदिकालीन मानव तथा उनके शारीरिक, सामाजिक

Scanned by CamScanner

एवं सांस्कृतिक पक्षों के अध्ययन पर बल डाला जाता है जबकि समाज मनोविज्ञान में व्यक्तियों के व्यवहारों एवं अनुभूतियों का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति में किया जाता है। दूसरा अन्तर विधि से सम्बन्धित है। समाज मनोविज्ञान में मूल रूप से प्रयोगात्मक विधि (experimental method) द्वारा ही व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है जबकि मानवशास्त्र में विषय-वस्तु का अध्ययन करने के लिए मानवशास्त्री या शोधकर्त्ता को उस समुदाय (community) में रहना पड़ता है जिसका वे अध्ययन कर रहे हैं। समुदाय में रहकर मानवशास्त्री समुदाय के व्यक्तियों के रीति-रिवाज, धर्म, विश्वास आदि का प्रेक्षण (observation) करते हैं और उसका एक अभिलेख (record) तैयार करते हैं।

इस तरह से हम देखते हैं कि समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध समाजशास्त्र (Sociology) तथा मानवशास्त्र (Anthropology) दोनों से ही गहरा है।

5. समाज मनोविज्ञान तथा राजनीतिशास्त्र में सम्बन्ध *(Relationship between Social Psychology and Political Science)* — समाज मनोविज्ञान तथा राजनीतिशास्त्र में ही गहरा सम्बन्ध है। राजनीतिशास्त्र वह विज्ञान है जो राज्य एवं सरकार की आधारभूत स्थितियों, उनकी प्रकृति एवं विधि, स्वरूप तथा विकास को समझने की कोशिश करता है। इस तरह से राजनीतिशास्त्र में राज्य और सरकार दोनों का अध्ययन किया जाता है। फ्रांसीसी विद्वान पॉल जैनेट[1] (Paul Janet) के शब्दों में, "राजनीतिशास्त्र समाज विज्ञान का वह अंग है जो राज्य के आधार पर शासन के सिद्धान्तों की विवेचना करता है।" अतः यह स्पष्ट है कि राजनीतिशास्त्र में व्यक्तियों की राजनैतिक गतिविधियों का विश्लेषण किया जाता है। इस तरह के विश्लेषण में समाज मनोविज्ञान काफी मदद करता है। अगर गौरपूर्वक देखा जाय तो मनुष्य सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है और उसके प्रत्येक कार्य जिसमें राजनैतिक कार्य भी सम्मिलित होता है, के पीछे एक निश्चित मनोवृत्ति (attitude), पूर्वाग्रह (prejudice) आदि होती है। समाज मनोविज्ञान अपने क्षेत्र में किये गये अध्ययनों के आधार पर प्राप्त तथ्यों के द्वारा व्यक्तियों की इन मनोदशाओं को समझने में काफी मदद करता है। कोई भी राज्य तथा सरकार तबतक सफल नहीं हो सकती जबतक वह अपनी प्रजा की इन मनोदशाओं के मनोवैज्ञानिक स्थिति को न समझे। किसी भी स्थायी तथा लोकप्रिय शासन के लिए यह आवश्यक है कि सरकार अपने कार्यों में प्रजा के मानसिक विचारों तथा नैतिक भावनाओं को सही-सही प्रतिबिम्बित करे। इस कार्य में सफलता के लिए राजनीतिशास्त्र को समाज मनोविज्ञान पर निर्भर करना पड़ता है। एक समाज मनोवैज्ञानिक अपनी विविध प्रणालियों एवं प्रविधियों द्वारा राज्य के नागरिकों की मनोवृत्ति (attitude), सामाजिक प्रत्यक्षण (social perception), पूर्वाग्रह (prejudice) आदि का अध्ययन कर उनकी सही-सही मनोदशा की अवस्था को बतलाता है। इतना ही नहीं, राज्य एवं सरकार की सफलता के लिए एक अच्छा नेता (leader), अनुकूल जनमत (favourable public opinion) एवं प्रभावकारी प्रचार (effective propaganda) की आवश्यकता होती है। समाज मनोविज्ञान इन क्षेत्रों में भी राजनीतिशास्त्र की मदद काफी करता है। समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर यह बतलाते हैं, कि एक सफल नेता के क्या लक्षण होते हैं, उनके कौन-कौन प्रमुख शीलगुण (traits) हैं, नेतृत्व को कैसे प्रभावकारी (effective) बनाया जा सकता है, अनुकूल जनमत का निर्माण कैसे होता है, प्रचार किन-किन प्रविधियों द्वारा किया जाना चाहिए, प्रचार को कैसे प्रभावकारी बनाया जा सकता है, आदि-आदि।

---

1. "Political Science is that part of social science which treats of the foundation of the state and the principles of government." — Paul Janet

इन सभी बातों की जानकारी प्राप्त होने से राज्य तथा सरकार दोनों को ही व्यक्तियों के राजनैतिक क्रिया-कलापों के बारे में समझने में काफी मदद मिलती है।

दूसरी तरफ समाज मनोविज्ञान को भी भिन्न-भिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों का अध्ययन करने के लिए राजनीतिशास्त्र पर निर्भर करना पड़ता है। राजनीतिशास्त्र समाज मनोविज्ञान को उन राजनैतिक क्रिया-कलापों एवं गतिविधियों से परिचित कराता है जिनसे व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक परिस्थिति में काफी हद तक प्रभावित होता है। उदाहरणस्वरूप, राजनीतिशास्त्र समाज मनोविज्ञान को उन कारणों से परिचित कराता है जिनसे समाज में राजनैतिक तनाव (political tension), दंगे (riots) गृह-युद्ध आदि होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध के कारणों से भी राजनीतिशास्त्र समाज मनोविज्ञान को अवगत कराता है। ये सारी घटनाएँ कुछ ऐसी हैं जिनसे व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार काफी प्रभावित होता है। इस तरह से हम देखते हैं कि समाज मनोविज्ञान को भी राजनीतिशास्त्र पर निर्भर रहना पड़ता है।

अतः हम यह कह सकते हैं कि समाज मनोविज्ञान तथा राजनीतिशास्त्र में काफी घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि ये दोनों विज्ञान एक-दूसरे पर बहुत हद तक निर्भर करते हैं। इस तरह के सम्बन्ध के बावजूद भी इन दोनों विज्ञानों में मौलिक अन्तर है जो निम्नांकित है —

(i) राजनीतिशास्त्र तथा समाज मनोविज्ञान का अध्ययन-विषय (subject-matter) भिन्न-भिन्न हैं। राजनीतिशास्त्र राजनीतिक संस्थानों (political institutions), राज्य तथा सरकार के भिन्न-भिन्न रूपों आदि का अध्ययन करता है जबकि समाज मनोविज्ञान समाज में व्यक्तियों द्वारा की गई अन्तःक्रियाओं (interactions) का अध्ययन करता है। समाज मनोविज्ञान में दोनों तरह की अन्तःक्रियाओं अर्थात चेतन अन्तःक्रियाओं (conscious interactions) तथा अचेतन अन्तःक्रियाओं (unconscious interactions) का अध्ययन किया जाता है जबकि राजनीतिशास्त्र में नागरिकों एवं सरकार की चेतन क्रियाओं का ही विश्लेषण किया जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि समाज मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र (scope) राजनीतिशास्त्र के कार्यक्षेत्र से अधिक बड़ा है।

(ii) राजनीतिशास्त्र व्यक्ति के राजनीतिक क्रियाओं के बाहरी पक्ष पर अधिक बल डाला है परन्तु इन क्रियाओं के मनोविज्ञानिक पक्ष पर कोई बल नहीं डालता है। परन्तु समाज मनोविज्ञान व्यक्ति की क्रियाओं के मनोवैज्ञानिक पक्ष (psychological aspect) पर अधिक बल डालता है। दूसरे शब्दों में, समाज मनोविज्ञान इस बात के अध्ययन पर अधिक बल डालता है कि सामाजिक परिस्थिति में किया जाने वाला व्यवहार किस हद तक अन्य कारणों के अलावा मनोवैज्ञानिक कारणों एवं नियमों द्वारा निर्देशित होता है।

(iii) समाज मनोविज्ञान एक वस्तुपरक विज्ञान (positive science) है। दूसरे शब्दों में, इसमें व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन यथार्थ रूप से यानी जैसा वह होता है, उसी रूप से किया जाता है जबकि राजनीतिशास्त्र आदर्शात्मक विज्ञान (normative science) होने के नाते राजनीति के उन पहलुओं पर भी विचार करता है जिनमें आदर्शों एवं मूल्यों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

इस तरह से हम देखते हैं कि समाज मनोविज्ञान तथा राजनीतिशास्त्र में सम्बन्ध होते हुए भी कुछ विभिन्नताएँ हैं।

6. समाज मनोविज्ञान तथा अर्थशास्त्र में सम्बन्ध *(Relationship between Social Psychology and Economics)* — समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध अर्थशास्त्र से भी है। अर्थशास्त्र मनुष्य के सामाजिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू अर्थात आर्थिक पहलू का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों

Scanned by CamScanner

में, अर्थशास्त्र मनुष्य के सामाजिक जीवन के आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। किस प्रकार मनुष्य धन कमाता है, किन परिस्थितियों में वह उसे जमा करता है तथा किस प्रकार खर्च करता है, आदि कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनका अध्ययन अर्थशास्त्र में गंभीर रूप से किया जाता है। अपनी इन विभिन्न आर्थिक क्रियाओं का गंभीर रूप से अध्ययन करने के लिए अर्थशास्त्र में भिन्न-भिन्न नियमों का प्रतिपादन किया गया है जिनमें माँग का नियम (Law of demand), आपूर्ति का नियम (Law of supply), उपयोगिता ह्रास नियम (Law of diminishing utility), समसीमान्त उपयोगिता नियम (Law of equimarginal utility) तटस्थ वक्र (Indifference curve) आदि प्रधान हैं। इन सभी नियमों का कुछ-न-कुछ मनोवैज्ञानिक आधार है। व्यक्ति की आवश्यकता, माँग, उपयोगिता, संतुष्टि आदि सभी मानसिक प्रक्रियाएँ हैं जिनके मनोवैज्ञानिक आधार को समझे बिना उनसे सम्बन्धित नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना संभव नहीं है। इतना ही नहीं, औद्योगिक उतार-चढ़ाव, औद्योगिक हड़ताल, श्रमिक कुशलता आदि भी कुछ ऐसे तथ्य हैं जिनका स्पष्ट आधार कुछ मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रक्रियाएँ हैं जिनको समझे बिना उनका वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सकता है। इस तरह से हम देखते हैं कि अर्थशास्त्र को अपनी समस्याओं की ठीक ढंग से समझने तथा उसका अध्ययन करने के लिए समाज मनोविज्ञान पर आधारित रहना पड़ता है। दूसरी तरफ इन आर्थिक क्रियाओं द्वारा व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार काफी हद तक प्रभावित होता है। व्यक्ति का सामाजिक जीवन उन क्रियाओं द्वारा इस हद तक प्रभावित होता है कि स्पष्ट रूप से समाज में सामाजिक-आर्थिक विभिन्नता देखने को मिलती है। इस तरह की विभिन्नताओं का वैज्ञानिक अध्ययन समाजशास्त्र में किया जाता है तथा इन विभिन्नताओं द्वारा व्यक्तियों में सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन समाज मनोविज्ञान में किया जाता है। इस तरह से हम देखते हैं कि अर्थशास्त्र द्वारा समाज मनोविज्ञान भी काफी प्रभावित होता है। इतना ही नहीं, अर्थशास्त्र दंगे, युद्ध, क्रान्ति, उच्च-जीवन स्तर आदि के आर्थिक पक्षों का स्पष्टीकरण करके अस्वस्थ मनोवैज्ञानिक कारणों (unhealthy psychological factors) जैसे—द्वेष, घृणा, मानसिक तवाव आदि से व्यक्ति को बचाता है और एक संतुलित मानसिक स्वास्थ्य (balanced mental health) विकसित होने में मदद करता है। दूसरी तरफ, समाज मनोविज्ञान प्रचार के उपयुक्त साधनों, जनमत के विकास करने की तरीकों तथा संघर्ष एवं तनाव कम करने के तरीकों को बता कर उद्योगपतियों को उत्पादन बढ़ाने एवं उसका ठीक से वितरण करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करता है। इस तरह से अर्थशास्त्र और समाज मनोविज्ञान एक-दूसरे को अपने-अपने अध्ययन क्षेत्रों में मदद करके एक विशेष सम्बन्ध कायम करते हैं।

इस विशेष सम्बन्ध के बावजूद भी इन दोनों विज्ञानों में कुछ अन्तर है। पहला अन्तर अध्ययन-विषय (subject matter) से सम्बन्धित है। अर्थशास्त्र का अध्ययन विषय आवश्यकता, मूल्य, आपूर्त्ति (supply), धन, उत्पादन, मजदूरी, लगान, सूद, मुद्रा आदि है जबकि समाज मनोविज्ञान का अध्ययन-विषय व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों के भिन्न-भिन्न पहलुओं जैसे—मनोवृत्ति (attitude), पूर्वाग्रह (prejudice), समूह, फैशन, प्रचार, जनमत, सुझाव, समाजीकरण आदि है। दूसरा अन्तर विधि (method) से सम्बन्धित है। अर्थशास्त्र अपनी विषय-वस्तु का अध्ययन करने के लिए मूलतः निगमन विधि (deductive method) और आगमन विधि (inductive method) को मिलाकर या पृथक रूप से प्रयोग करता है जबकि समाज मनोविज्ञान मूलतः प्रयोगात्मक विधि (experimental method), सर्वे विधि, व्यक्ति-इतिहास विधि (case history method) आदि का उपयोग अपनी विषय-वस्तु के अध्ययन में करता है। तीसरा अन्तर इन दोनों विज्ञान के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है।

Scanned by CamScanner